बालक राम किछुवे नाहि जाने ।

ता हेरि रह नाहि प्राणे ।।

2. वैदिक एवं अपभ्रंश भारतीय साहित्य पर विस्तार से चर्चा कीजिए । (15)

अथवा

मैथिली भाषा के साहित्य पर एक निबंध लिखिए।

3. कालिदास रचित 'उत्तरमेघ' के काव्य सौंदर्य पर प्रकाश डालिए । (15)

अथवा

'सप्त पर्ण' राम काव्य का जन्म का प्रतिपाद्य लिखिए।

4. संत नामदेव के पदों का भाव सौंदर्य लिखिए। (15)

अथवा

ललद्यद के पदों का भाषा सौष्ठव लिखिए।

5. 'काबुलीवाला' कहानी का मूल संदेश स्पष्ट कीजिए ।। (15)

अथवा

'रामविजय' नाटक की तात्विक समीक्षा कीजिए।

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No..............

आपका अनुक्रमांक............

Sr. No. of Question Paper : 1662 **I**

Unique Paper Code : 2052102301

Name of the Paper : Bhartiya Sahitya

Name of the Course : **B.A. (Hons) Hindi**

Semester : III

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

RAMANUJAN COLLEGE LIBRARY
Kalkaji 110019

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए (10 + 10 + 10)

(क) वत्स ! स्वच्छ प्रसन्न जल की

देख निर्मल कान्ति,

याद आती सन्त मन की

विगत कल्मष शांति !

P.T.O.

कलश रख दो और दे दो
मुझे वल्कल चीर,
यहीं अवगाहन करूँगा
धार यह गम्भीर।

अथवा

टहरी पर बैठी होगी, पड़े होंगे सामने फूलों के
सहारे गिर रही होगी
अवधि के बाकी महीनें
बिताए दिनों के सम्पर्क सुख की
यादों का ले रही होगी मन ही मन स्वाद
बिछुड़ी प्यारी के यही तो होते हैं
साधन।

(ख) पिया को खोजने में निकली
सुन ही यह दिन बीता
कब यह रात ढली!
मिले अंत में घर में ही तो
मेरे कंत छली !

मेरे उनके स्नेह मिलन की
थी यह घड़ी - भली ।

अथवा

हम सब समान हैं, समानता का आया युग, आया !
मिट रहा कपट, निश्छल जनता का आया युग, आया !
जो सच्चे हैं, वह बड़े ! उन्हीं का आया युग, आया !
यह प्रलय काल दुर्जन कपटी का ! आया युग, आया!
आओ नाचें - गायेंगे जी भर, मोद मनायेंगे !
आनंद छंद मय स्वतंत्र्ता पर मोद मनायेंगे !

(ग) संसार की भाषाओं की भिन्नता के सम्बन्ध में उसे ज्ञानदान करने के लिए मेरे प्रवृत होने के पहले ही वह दूसरे प्रसंग पर चली गई। 'देखो पिताजी, भोला कह रहा था कि आकाश में हाथी सूंड से पानी डालता है, उसी से वर्षा होती है ओ माँ ! भोला कैसी बेकार की बातें करता है ! खाली बकबक करता रहता है! दिन-रात बकबक लगाए रहता है।'

अथवा

नेहबि राम राक्षस लागि मागि ।
आहे अधिक हृदये दहे आगि ।।